नंब और वर्श मधान (169-85/4429 —चूंकि हरियाणा हो राज्यक्तिक ने गये है कि मैं गार परिवहन ग्रायुक्त हरियाणा चण्डीगढ़ थ जनरा नैनेजर, हरियाणा राज्य परिचहन कैजल के श्रमिक श्री हथा सिंह तथा उसके प्रवन्तकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मानने में कोई श्राणिक विवाद है;

म्रोर बॅकि हरियाण। हे राज्यपान विवाद हो न्यायनिर्णय हैत निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

हमान्तर, यात साथों गेल विवाद अधिनियम, 1947 की बारा 16की उपात (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने हो हित्य गा है राज्य श्व समके हारा सरकारी अधिनचना मंद 3(44) 84-3-अम, दिनांद 16 अप्रैन, 1985 हारा उक्त प्रतिस्वतः की धारा 7 के स्रजीन गठिन श्रम न्याया या, श्रमा कि के विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिया मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट नीत साम में देने देश निर्विष्ट करने हैं जो कि उक्त प्रवत्त्रकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से स्यंगत प्रवत प्रसारकात मामला है या

ला: त्रो ह्वा जिंह, पत्र श्री लाल पिंह की सेक्शओं का समापन न्यायोचित तनाठीक है? या नहीं, तो बह किस राहते का इकदार है ?

सं । श्री । वि , प्रस्वान () 1.51 - 85/4436, - चूंकि हरियाण हो राज्यवाल की राये हैं कि मैं । परिवाहन श्राय्क्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ । 2. जनरत्र सेते हर, हरियाणा हत्त्वेज, जैवल के ध्रमिक श्री हाम कुतार तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में काई श्री गोगिक विवाह है :

यौरं कृति हरियामा के राज्यवान विचाय में न्यायनिर्णय क्रेंग निर्दिष्ट करना बंखनीय समझते हैं ;

्मिलिंग, प्रव. श्रामोगिक शिवान श्रिधितिश्वम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का परोग करते हुने हरियाणा में राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रविस्चिता संजू 3(44)84-3-श्रम, दिनांक 18 अर्पल, 1985द्वारा उक्त प्रश्चित्तको आरः 7 वे स्वीन गठित श्रम न्यायात्य श्रम्बाना को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंजान को तथा नाम में रेते हेए निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विदादग्रस्तमामला है यो विवाद से पर्यान प्रयवा नम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री राम ह्यार का सेवा मों का समापन न्यायचित तथा ठीक है यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

श्रौर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्देष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीयोगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करने हुये हरियाणा के राज्यशाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं 5415-3-अम-68/15254, दिनोंक 20 जून, 1978 के साथ पढ़ने हुये श्रेधिसूचना सं 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त श्रिशिसूचना की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय फरीदावाद का विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायिनण्य एवं पंचाट तीन मास में देने होनू निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रयवा संवंधित मामला है:---

क्या श्री जिब जमार की सेवाओं का समापन न्यायोचित है तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं० ग्रो० वि०/एफ०डी०/2-86/1450.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये हैं कि हरियाणा रेडियेटरज लि०, प्लाटनं० 107, नैक्टर-24. फरीदाबाद के श्रमिक श्री हरि राम तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीडोगिक विवाद है;

भौर नंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्विष्ट करना बांछनीय समझते हैं:

्म लिए, अब, आदांगिक विवाद अधिनियम. 1947, की घारा 10 की उपघारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गर्द शक्तियों का प्रयोग करते हुने हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3-अम-68/15254, दिनांक 20 जून. 1978 के साथ पढ़ते हुने अधिम् चना सं० 11495-ठी-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी. 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारों 7 के अधीन भटित अम न्यायालय, फरीदावाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसँगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्ध्य एवं पंचाट तीन मास मेदेने देन निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से समंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री हरि राम की सेवाग्रों का समापन न्याणीचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह किस राहत का हकदार है ?